edit:arunjaity.qxd 9/26/2010 9:26 PM Page 182

सोमवार 1 मार्च 2010
दैनिक जागरण

विलक्षण नानाजी

नानाजी देशमुख के अवसान के साथ देश और विशेष रूप से उत्तर प्रदेश एक प्रतिबद्ध समाजसेवी से विहीन हो गया। वह वस्तुतः ऋषि परंपरा के राजनेता और समाजसेवी थे। उनका जीवन आज के राजेताओं के लिए एक आदर्श उदाहरण है। उनका मानना था कि साठ साल के बाद राजनेताओं को खुद को समाजसेवा में अर्पित कर देना चाहिए। उन्होंने स्वयं ऐसा कर यह प्रमाणित किया कि उनकी कथनी व करनी में अंतर नहीं था। उन्होंने अपने कार्य-व्यवहार से यह भी साबित किया कि राजनीति का मुख्य उद्देश्य समाजसेवा होना चाहिए। उन्होंने इस धारणा को झुठलाया कि राजनीति के बगैर समाजसेवा नहीं हो सकती। उनका ध्येय वंचित एवं उपेक्षित वर्गों की सहायता करना मात्र नहीं, बल्कि उन्हें स्वावलंबी बनाना था। उन्होंने यह सिद्ध किया कि यदि इच्छाशक्ति हो तो इस ध्येय की पूर्ति की जा सकती है और ग्रामीण जीवन में आमूल-चूल परिवर्तन लाया जा सकता है। निःसंदेह भारतीय राजनीति भी उनकी ऋणी रहेगी, क्योंकि आपातकाल के खिलाफ जो जोरदार मुहिम छिड़ी, उसका श्रेय उन्हें भी जाता है। आज पूरे देश में फैले सरस्वती शिशु मंदिरों को स्थापना का श्रेय तो सिर्फ उन्हें ही जाता है।

यह आश्चर्यजनक है कि मूल रूप से महाराष्ट्रवासी होने के बावजूद उन्होंने समाजसेवा के लिए उत्तर प्रदेश को कर्मभूमि बनाया। कोई निःस्वार्थ समाजसेवी ही ऐसा कर सकता है। पहले उन्होंने गोंडा जिले में जयप्रभा गांव के माध्यम से अपने सपने को साकार किया और फिर चित्रकूट के जरिये। जयप्रभा गांव को उन्होंने सच्चे अर्थों में स्वावलंबी बनाया। यह ध्यान रहे कि वह सबसे पिछड़े गांव की तलाश में यहां आए थे। कुछ ही समय में उन्होंने इस गांव को ऐसा बना दिया कि गांव वालों को दैनिक जरूरत की कोई भी वस्तु बाजार से नहीं खरीदनी पड़ती थी। यह समझना मुश्किल है कि ग्राम्य विकास की ऐसी कोशिश सरकारी नीतियों में क्यों नहीं झलकती? उन्होंने गोंडा जिले में स्थान-स्थान पर जो अनेक प्रकल्प चलाए, उनका असर आसपास के इलाकों पर भी पड़ा। गोंडा के बाद उन्होंने चित्रकूट के पिछड़े इलाकों का उद्धार किया। क्या यह उम्मीद की जाए कि उनके जीते जी न सही, उनके निधन के बाद शासन में बैठे लोग उनके तौर-तरीकों का अनुकरण करेंगे? उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि यही होगी कि गांवों का विकास उसी तरह किया जाए, जैसा उन्होंने करके दिखाया।

दिल्ली 1 मार्च, 2010
राष्ट्रीय सहारा

ऐसा हो राजनेता

एक आदर्श इंसान का प्रतिरूप या मॉडल कैसा हो सकता है? अगर आपके अंदर इस बात की जिज्ञासा हो तो बस नानाजी देशमुख जी के जीवन-वृत्तांत को नजरों से गुजार लीजिए। उम्र का शतक लगाने में महज पांच वर्षों से चूक गए नानाजी का जीवन-संघर्ष व उनकी उपलब्धियां उस हर इंसान के लिए प्रकाश स्तंभ की तरह हैं जो अवरोधों के समुद्र पर रास्ता बनाता है और समाज की तरक्की के मानक गढ़ता है। बचपन में ही मां-बाप की सुरक्षा से महरूम नानाजी ने दरिद्रता का दंश उस उम्र में झेला, जब वक्त खाने-खेलने का होता है। मंदिरों में रातें गुजार और दिन में सब्जियां बेचकर नानाजी ने सिर्फ पढ़ाई नहीं, बल्कि उच्च शिक्षा का गौरव हासिल किया और बता दिया कि 'जहां चाह है, वहां राह' को तो निकलना ही है। नानाजी के आदर्श थे बाल गंगाधर तिलक, जिनसे उन्होंने राष्ट्रीयता और समाजसेवा की प्रेरणा ली। आर.एस.एस. के सरसंघचालक हेडगेवार की प्रेरणा से उन्होंने आरामदेह नौकरी और सुखी जीवन का रास्ता न चुनकर एक बार फिर संघर्ष की राह पकड़ी। उन्हें संघ के विस्तार के लिए यूपी भेजा गया, जहां उन्होंने अपनी अद्भुत संगठन-क्षमता दिखाई। गांठ में पैसे नहीं, हर तीन दिन में धर्मशाला बदलकर रात बिताने का नया ठिकाना तलाशना, संघर्ष की ऐसी कंटीली राह पर चलकर उन्होंने दायित्व को पूरा किया। उसके लिए 'पांचजन्य', 'राष्ट्रधर्म', 'स्वदेश' जैसे प्रकाशनों को आरंभ कर उन्हें जन-जन तक पहुंचाया। संघ के पहले सरस्वती शिशु मंदिर नामक विद्यालय की शुरूआत की। संगठन-क्षमता का यही प्रदर्शन उन्होंने भारतीय जनसंघ की स्थापना और विस्तार में दिखाया। नानाजी का असल राजनीतिक कौशल तो कांग्रेस को धाराशायी कर यूपी में पहली बार जनता पार्टी की सरकार के गठन में दिखा। चरणसिंह मुख्यमंत्री बने तो नानाजी को भी दबाव में मंत्री बनना पड़ा। राममनोहर लोहिया भी नानाजी की संगठन-क्षमता से चमत्कृत रहते थे। उनका मानना था कि मूल्यों और आदर्शों के बिना राजनेता की कोई कीमत नहीं होती, इसलिए साठ की आयु पूरी करते ही वह राजनीति से अलग होकर समाजसेवा में लग गए। उन्होंने उत्तर प्रदेश, चित्रकूट को चुना। उन्होंने पांच सौ गांवों का चयन कर उन्हें आत्मनिर्भर बनाने और आपसी झगड़े-झंझटों से दूर रहकर चलने की प्रेरणा दी। पूर्व राष्ट्रपति कलाम यहां की तरक्की से ऐसे अभिभूत हुए कि पूरे देश के लिए इसे मॉडल बनाने की बात कह दी।